प्रा.डॉ.बी.डी.सगरे

एम.ए., पीएच्.डी.

अध्यक्ष, हिंदी विभाग,

लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय

सतारा

प्रमाणपत्र

यह प्रमाणित किया जाता है कि कु.मीना कृष्णा शिंदे ने शिवाजी विश्वविद्यालय की एम.फिल.(हिन्दी) उपाधि के लिए "स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी के उपन्यासों में ग्राम जीवन" शीर्षक से प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध मेरे निर्देशन में सफलतापूर्वक पूरे परिश्रम के साथ पूरा किया है। यह शोधार्थीनी की मौलिक कृति है। जो तथ्य इस लघु शोध प्रबंध में प्रस्तुत किये गये हैं, मेरी जानकारी के अनुसार वे सही है। कु. मीना कृष्णा शिंदे के प्रस्तुत शोध कार्य के बारे में मैं पूरी तरह संतुष्ट हूँ।

डॉ. बी. डी. सगरे

शोध–निर्देशक

सतारा

दिनांक 30/8/2000

==========

अनुशंसा

==========

हम अनुशंसा करते है कि कु.मीना कृष्णा शिंदे का एम्.फिल. (हिन्दी) का लघु शोध प्रबंध "स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी के उपन्यासों में ग्राम–जीवन" (बाबा बटेसरनाथ, बलचनमा, रतिनाथ की चाची, मैला आँचल, गंगा मैया के विशेष संदर्भ में) परीक्षणार्थ प्रस्तुत किया जाए।

प्रा.डॉ.भरत धोंडीराम सगरे
हिंदी विभाग अध्यक्ष
लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय,
सतारा

L. B. S. COLLEGE SATARA

प्रा. आर. जी.चव्हाण
प्राचार्य,
लाल बहादूर शास्त्री महाविद्यालय
सतारा

प्रख्यापन

"स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी के उपन्यासों में ग्राम–जीवन) (बाबा बटेसरनाथ, बलचनमा, रतिनाथ की चाची, मैला आँचल, गंगा मैया के विशेष संदर्भ में) यह लघु शोध प्रबंध मेरी मौलिक रचना है, जो एम्.फिल. के लघु शोध प्रबंध के रूप में प्रस्तुत की जा रही है। यह रचना इससे पहले इस विश्वविद्यालय या अन्य किसी विश्वविद्यालय की उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं की गई है।

सतारा

दिनांक 30/6/2000

Shinde.
(कु. एम. के. शिंदे)

प्राक्कथन

आज विश्वसाहित्य के औपन्यासिक जगत् में वृध्दि लक्षित हो रही है। स्वातंत्र्योत्तर युग में उपन्यास विधा सर्वाधिक लोकप्रिय रही है। समाज जीवन का चित्रण करना उपन्यास की विशेषता रही है। आधुनिक काल में 'उपन्यास सम्राट' मुंशी प्रेमचन्द ने उपन्यास विधा को बल दिया। उनके कारण ही झुग्गी–झोपड़ी, दलित, शोषित, उपेक्षित व्यक्ति, नारी तथा ग्राम जीवन आदि पर उपन्यास लिखे गये। भारत देश को "ग्रामों का देश" कहा जाता है। देश की कुल आबादी में से करीबन 75% लोग गावों में रहते हैं। स्वातंत्र्यपूर्व काल में यह गाँव पिछड़ा और अप्रगत रहा लेकिन स्वातंत्र्योत्तर काल में ग्राम जीवन में धीरे–धीरे परिवर्तन होने लगा। नई चेतना, नई भावधारा गावों में बहने लगी। भारतीय ग्राम जीवन के दर्शन कराना इस लघु शोध प्रबंध का उद्देश्य रहा है।

गांधीजी के "देहात की ओर चलो" इस आवाहन के अनुसार हिन्दी साहित्यकारों ने देहाती जन–जीवन को विषय बनाकर साहित्य कृतियों का निर्माण किया। अज्ञानी, अंधश्रध्द, अंधविश्वासी और भोले–भाले ग्रामीण जनों की जीवन की कथा–व्यथा को वाणी देने का कार्य साहित्यकारों ने किया। प्रेमचन्द, नागार्जुन, रेणु, भैरव प्रसाद गुप्त, शैलेश मटियानी, हिमांशु जोशी, शिव प्रसाद सिंह, रामदरश मिश्र आदि जैसे कई श्रेष्ठ उपन्यासकारों ने ग्राम जीवन से संबंधित महत्वपूर्ण कृतियों का निर्माण किया। डॉ.चंद्रकांत बांदिवडेकर, डॉ.आदर्श सक्सेना, डॉ.विवेकी राय, पारसनाथ सिंह, डॉ.ज्ञानचंद गुप्त, डॉ.ह.के.कडवे आदि कई श्रेष्ठ आलोचकों एवं अनुसंधाताओं ने उपन्यास के सभी पहलूओं पर विस्तृत विवेचन किया, जिसके कारण उपन्यास विधा का विकास हुआ।

स्वातंत्र्योत्तर काल में हिन्दी उपन्यास में नई प्रवृत्तियों का निर्माण हुआ। ग्राम जीवन से जुड़े उपन्यासों का निर्माण इसका ही परिणाम है। आलोच्य उपन्यासों में ग्राम जीवन के सभी तत्व, विशेषताएँ और प्रवृत्तियाँ दिखाई देती है। ग्राम जीवन की सामाजिक, सांस्कृतिक पृष्ठभूमी, अंधविश्वास, विवाह संस्कार, रूढ़ि–प्रथा–परंपरा, राजनीतिक शोषण, औद्योगीकरण का अभाव, शोषित नारी, भ्रष्टाचार आदि सभी का चित्रण उपन्यासों में हुआ है। ग्रामबोली को भी माध्यम बनाकर देश काल वातावरण तत्व को बदल दिया है। यह उपन्यास भारतीय ग्राम जीवन की तस्वीर लगते है।

भारतीय संस्कृति और सभ्यता को सुरक्षित रखने का कार्य ग्रामों में हो रहा है। भारत की सही संस्कृति देहातों में निवास करती है, ऐसा यहाँ लगता है लेकिन नागरीकरण, औद्योगीकरण, शहरों का आकर्षण, यातायात की सुविधा, प्रसार माध्यमों का प्रभाव आदि के कारण लोक संस्कृति की जड़े हिल रही है। उसे स्पष्ट करना प्रस्तुत शोध प्रबंध का उद्देश रहा है।

प्रस्तुत लघु–शोध–प्रबंध के लिए "बाबा बटेसरनाथ", "बलचनमा", "रतिनाथ की चाची", "मैला आँचल", "गंगा मैया" आदि उपन्यासों का आधार लिया है। इन उपन्यासों के द्वारा स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी के उपन्यासों में ग्राम जीवन तथा ग्राम जीवन का चित्रण इस पर प्रकाश डाला है।

प्रस्तुत लघु–शोध–प्रबंध को छह अध्यायों में विभाजित किया है।

प्रथम अध्याय – "भारतीय ग्राम जीवन की स्थिति", इस अध्याय में ग्राम की परिभाषा उसकी विशेषता, गाँव का रूप, ग्राम जीवन की समस्या आदि का विवेचन करते हुए स्वातंत्र्योत्तर ग्राम जीवनकी स्थिति स्पष्ट की है। वर्तमान काल की स्थिति और समस्याएँ आदि को भी स्पष्ट करने का कार्य किया है।

द्वितीय अध्याय – "ग्राम जीवन के चितेरे प्रतिनिधि उपन्यासकार" इस अध्याय में हिन्दी उपन्यास विधा में ग्रामीण जन–जीवन का चित्रण करनेवाले उपन्यासकारों की कृतियों को संक्षिप्त रूप में देखा है। प्रेमचन्द, रेणु, नागार्जुन, रांगेय राघव, भैरवप्रसाद गुप्त, रामदरश मिश्र, राही मासूम रजा, शिव प्रसाद सिंह, जगदीश चंद्र, श्रीलाल शुक्ल आदि उपन्यासकारों की कृतियों में चित्रित ग्राम जीवन का लेखा–जोखा प्रस्तुत किया है।

तृतीय अध्याय – "स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यासों में चित्रित ग्राम जीवन" इस अध्याय में "बाबा बटेसरनाथ", "बलचनमा", "रतिनाथ की चाची", "मैला आँचल", "गंगा मैया" में चित्रित ग्राम जीवन को स्पष्ट किया है। आलोच्य उपन्यासों की सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, राजनीतिक स्थिति को स्पष्ट किया है।

चतुर्थ अध्याय – "स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यासों में चित्रित ग्राम जीवन की समस्याएँ" इसके अंतर्गत अंधविश्वास की समस्या, शोषण की समस्या, जातीय भेदाभेद की समस्या, भ्रष्टाचार की समस्या, अशिक्षा की समस्या, यौन संबंधों की समस्या आदि समस्याओं का विस्तार के साथ विवेचन किया है। साथ–ही–साथ नशापान की समस्या, भूख की समस्या, प्राकृतिक आपदा की समस्या, भौतिक सुविधाओं का अभाव की समस्या आदि गौण समस्याओं पर भी विचार किया है।

पंचम अध्याय – "स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी में उपन्यासों मे चित्रित प्रगतिवाद" इस अध्याय में प्रगतेवाद और प्रगतिवादी उपन्यासकार, प्रतिनिधी पात्र आदि का विवेचनात्मक विश्लेषण किया है। प्रगतिवादी, चेतित, विद्रोही, संघर्षरत ग्राम जीवन को स्पष्ट करने का कार्य किया है।

षष्ठ अध्याय – "उपसंहार" में लघु शोध प्रबंध में उपलब्ध निष्कर्षों को समाकलित किया है। ग्राम जीवन की विविध झांकियाँ उसमें होनेवाला परिवर्तन सरकारी सुधार योजना आदि पर विचार किया है।

यह मेरा सौभाग्य है कि मुझे लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय के हिन्दी विभाग अध्यक्ष डॉ. बी. डी. सगरे के निर्देशन में शोध कार्य करने का अवसर मिला। उनके मार्गदर्शन और प्रेरणा के कारण यह शोध कार्य संपन्न हो सका। श्रध्देय गुरूवर्य डॉ. बी. डी. सगरेजी ने व्यस्त क्षणों में अपना अमूल्य समय देकर बहुमुल्य निर्देशों के द्वारा ग्रामीण उपन्यास के अध्ययन में मुझे उत्साह और प्रेरणा दी उसके फलस्वरूप यह लघु–शोध–प्रबंध पूर्ण हो सका। उनके प्रति शाब्दिक आभार मेरे हृदय में स्थित कृतज्ञपूर्ण भावों को अभिव्यक्त करने में असमर्थ है।

प्रस्तुत शोध कार्य में प्रा. आर. जी. चव्हाण, प्रा.जयवंत जाधव, प्रा. यू. एन. कांबळे, प्रा.नाळे आदि के प्रति में कृतज्ञ हूँ, जिन्होंने मुझे समय–समय पर बहुमुल्य मार्गदर्शन किया। प्राचार्य डॉ.नलवडे, किसन वीर महाविद्यालय, वाई और प्राचार्य के. बी. शिंदे, महर्षि शिंदे हायस्कूल और ज्युनिअर कॅालेज तथा प्रा. शेख के प्रति मैं कृतज्ञ हूँ, जिन्होंने मुझे समय–समय पर प्रेरणा एवं मार्गदर्शन किया।

प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध के कार्य में लाल बहादूर शास्त्री महाविद्यालय के ग्रंथपाल एस. ई. जगताप तथा अन्य कर्मचारी, महर्षि शिंदे विद्यालय वाई के ग्रंथपाल सौ.कदम और अन्य सहकारी, किसन वीर महाविद्यालय के ग्रंथपाल एस. एन. हावल आदि की मैं विशेष ऋणी रहुँगी, जिन्होंने पुस्तकों को जुटाने में अत्यंत तत्परता से मेरी सहायता की।

मेरे शोध कार्य में सदा प्रेरणा देने वाले मेरे पूज्य पिताजी कृष्णा बाबूराव शिंदे, माँ शकुंतला कृष्णा शिंदे, भैय्या प्रल्हाद, भाभी सुनिता, मामी सौ.सावित्रा रामचंद्र सावंत, सौ.अरूणा सगरे आदि के आशीष के बल पर प्रस्तुत शोध कार्य संपन्न हुआ उनके प्रति मैं कृतज्ञ हूँ। साथ ही साथ मेरी बहन पद्मा, अर्चना, प्रतिमा, दिपा, मेरे सहकारी निलेश वायदंडे, संतोष कदम, अजय फरांदे, संजय येवले, साधना बल्लाळ, विद्या देशमुख, वनिता कर्णे आदि ने मेरी विशेष मदद की है उनके प्रति मैं आभारी हूँ।

सातारा

(कु. एम. के. शिंदे)